Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850

Impact Factor : 3.1560(UIF)
Volume - 5 | Issue - 9 | Oct - 2015

मोहन राकेश के साहित्य में मनोविज्ञान: समीक्षक दृष्टि

विनोद कुमार
कला एवं भाषा संकाय, लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, (पंजाब)

प्रस्तावना -

आधुनिक साहित्य को मनोविश्लेषणवाद ने पर्याप्त प्रभावित किया है। साहित्य का सम्बन्ध मानव मन से प्रगाढ़ रूप में है अत: साहित्यकारों द्वारा प्रस्तुत चरित्र-चित्रण पर आधुनिक मनोविज्ञान एवं मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव प्रमुख रूप में परिलक्षित होता है। मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करता है और साहित्यकार मानव व्यवहार का विश्लेषण करता है। पाश्चात्य साहित्यकारों ने फ्रायड, एडलर, एवं युंग के सिद्धान्तों का उपयोग अपने पात्रों के चरित्रांकन में किया। हिन्दी के कुछ उपन्यासकारों यथा अज्ञेय, जैनेन्द्र एवं इलाचन्द्र जोशी ने ऐसे पात्रों की सृजना की जो फ्रायड, युंग एवं एडलर के सिद्धान्तों से परिचालित है। इन चरित्रों को समझने के लिए हमें फ्रायड, युंग एवं एडलर के सिद्धान्तों को मूलत: समझ लेना चाहिए। 'फ्रायड ने अचेतन मन और काम भावना को मनोविश्लेषण में प्रमुख स्थान दिया। फ्रायड काम भावना को मानव मन की मूल परिचालिका शक्ति मानता है। उसके अनुसार धर्म, अर्थ, साहित्य, और संस्कृति की मूल प्रेरणा यही कामवृति है।'[1] सजक कल्पनाशील होने के कारण अपनी वर्जनाओं को काम प्रतीकों के रूप में अभिव्यक्ति देता है। जब हम सामाजिक मूल्यों एवं नैतिकता के बन्धनों के कारण अपनी काम प्रवृति एवं वासना का दमन करते हैं तब वह अचेतन मन में कुण्ठा या मनोग्रन्थि का रूप धारण कर लेती है। साहित्य और कला इन वासनाओं एवं मनोग्रन्थियों के रेचन का मार्ग प्रशस्त करती है। 'युंग के अनुसार मनुष्य की स्मृतियां मानसिक कार्य व्यापार को चेतन मन में एकत्र नहीं रख पाती और वे अचेतन में चली जाती है। अचेतन मन में दमित रहने वाली अनुभूतियों स्मृतियां एवं विचार अहं को स्वीकार्य नहीं हो पाते परिणामत: वहां भय, आशंका, मृत्यु जैसी स्थितियां उत्पन्न हो जाती है, जिससे मनुष्य का जीवन प्रभावित होता है।' [3]

मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों ने अपने व्यक्ति चरित्रों का निर्माण इसी आलोक में किया है। अज्ञेय के उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' का शेखर, जैनेन्द्र के त्यागपत्र की मृणाल एवं जैनेन्द्र के 'सुनीता' उपन्यास की नायिका सुनीता और इलाचन्द्र जोशी के 'महीप', 'नकुलेश' आदि इन्हीं ग्रन्थियों से परिचालित पात्र हैं।

मानव का अन्तर्जीवन ही उसके बहिर्जीवन का प्रेरक और परिचालक है। अन्तर्मन में दबी प्रवृतियां वैयक्तिक जीवन के साथ-साथ सामूहिक जीवन को भी प्रभावित करती हैं। इलाचन्द्र जोशी ने मनोविज्ञान को एक अस्त्र के रूप में प्रयुक्त किया हैं जिसकी सहायता से रोगी अंग का उपचार करके व्यक्ति को स्वस्थ बनाने पर बल देते दिखाई पड़ते हैं। मनोविश्लेषण के द्वारा इलाचन्द्र जोशी मनुष्य के मन में दबी विकृतियों एवं ग्रन्थियों की चीर-फाड़ करते हैं और यथार्थ चरित्र प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने अपने पात्रों के अन्तर्मन में निहित कुण्ठाओं, हीनताओं को सामने लाया है और यह दिखाने का प्रयास किया है कि व्यक्ति के व्यवहार का प्रेरक उसके अन्तर्जगत की विकृतियां है। मनोविश्लेषणवाद की यही साहित्यिक उपयोगिता है, जिसका उपयोग हिन्दी के कतिपय उपन्यासकारों ने अपने साहित्य में किया है। मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकारों में जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी एवं अज्ञेय का उल्लेखनीय योगदान है जैनेन्द्र के 'परख', 'सुनीता' और 'त्यागपत्र' के द्वारा हिन्दी उपन्यास में मनोविज्ञान दिखाई देता है। इन उपन्यासों में विभिन्न पात्रों के मन की उलझनों, गुत्थियों एवं शंकाओं को उपन्यासकार ने दिखाया है। 'त्यागपत्र' में मृणाल के आत्मपीडन की गाथा का मनोवैज्ञानिक चित्रण है, साथ ही अनमेल विवाह के दृष्परिणामों का चित्रण किया है। 'सुनीता' में फ्रायड के सिद्धान्तों के आलोक में हरिप्रसन्न का व्यवहार का चित्रण किया है। 'कल्याणी' एक अतृप्त और आधुनिक नारी की कथा इस में बताई है। 'सुखद' एक कुष्ठाग्रस्त नारी की स्थिति को बताती है। इलाचन्द्र जोशी ने उच्चकोटि के मनोविज्ञानिक उपन्यास लिखे है। 'सन्यासी', 'पर्दे की रानी', 'प्रेत और छाया', 'निर्वासित', 'जिप्सी और जहाज का पंछी' उपन्यास इलाचन्द्र

जोशी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास है, जिसमें जोशी जी ने मानव मन की कुण्ठाओं एवं ग्रन्थियों का विश्लेषण किया है उनके उपन्यासों का मूल विषय प्रेम एवं रोमांस का मनोविज्ञान विवेचन करना है। उन्होंने स्त्री पुरुष के प्रेम के बारे में बताया है। स्त्री पुरुष कैसे प्रेम के बन्धन में बंध जाना चाहते हैं और उनके मन की स्थिति कैसी हो जाती है इन सब का विवेचन जोशी जी ने किया है। 'अज्ञेय द्वारा रचित 'शेखर एक जीवनी', 'नदी के द्वीप' अज्ञेय जी के मनोविश्लेषणवादी नाटक हैं। 'शेखर एक जीवनी' में अज्ञेय जी ने शेखर के मन की स्थिति को बताया है कि शेखर के मन में कैसे कैसे भाव उठते थे और वह भाव कैसे कुण्ठाग्रस्त हो जाते थे। 'नदी के द्वीप' में अज्ञेय जी ने नर नारी के यौन सम्बन्धों को लेकर बात की है कि कैसे नर नारी यौन सम्बन्धों के लिए अग्रसर होते हैं। यह सब उन्होंने अपने उपन्यास में लिखा है।' [4]

मोहन राकेश के साहित्य में तो मनोविज्ञान भरा पड़ा है। उनकी कहानियाँ, उपन्यास और नाटक किसी सामाजिक परिस्थिति को लेकर नहीं लिखे गये बल्कि स्त्री पुरुष के सम्बन्धों को लेकर उन्होंने साहित्य लिखा। क्योंकि उनके अपने जीवन में भी दाम्पत्य जीवन को लेकर कई समस्याएं थी। इसी लिए उन्होंने अपने साहित्य को अपने ही जीवन से प्रेरित होकर लिखा है। उनकी कहानी 'क्वार्टर' में उन्होने शहरी जीवन को दिखाया है कि कैसे शंकर और राधा शहर में रहने जाते हैं और एक क्वार्टर मिल जाने पर उन दोनों को क्या-क्या समस्या का सामना करना पड़ता है जिस से उनके दाम्पत्य सम्बन्ध खराब होने लगता है। 'अपरिचित' भी मोहन राकेश की पति पत्नी को लेकर लिखी गई कहानी है। जिसमें कि पति पत्नी की आपसी समझदारी की कमी को लेखक ने दिखाया है। 'एक ठहरा हुआ चाकू' मोहन राकेश की एक ऐसी कहानी है जिसमें लेखक ने मनुष्य के मन की स्थिति को दिखाया है कि मनुष्य कैसे अपने मन के साथ सच बोलने के लिए संघर्ष करता है। मोहन राकेश जी के द्वारा लिखे नाटक 'लहरो के राजहंस' और 'आधे-अधूरे' भी मनोवैज्ञानिक आधार पर लिखे गए हैं, जिस में मोहन राकेश ने मनुष्य को मन की स्थिति और उस स्थिति का दुसरों पर क्या प्रभाव पड़ता है उसके बारे में बताया है। लहरों के राजहंस में नन्द के मन की स्थिति और उसके मन के संघर्ष को दिखाया है। मोहन राकेश के उपन्यास 'अंधेरे बन्द कमरे' और 'अन्तराल' में भी उन्होंने पति पत्नी के सम्बन्धों के बारे में और उनके मन के क्या भाव होते हैं, उनको हमारे सामने दिखाया है। 'आपका बंटी' मन्नु भंडारी का बाल मनोविज्ञान पर आधारित एक उपन्यास है, जिस में मन्नु भंडारी ने बंटी के मनोविज्ञान को नाटक में दिखाया है कि कैसे बंटी के माता-पिता का तलाक होता है, इस का बंटी के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है और वह कैसे उपन्यास के अन्त में अकेले का अकेला रह जाता है।

'आधे-अधूरे' नाटक मोहन राकेश का एक यथार्थवादी नाटक है। इस नाटक में मोहन राकेश जी ने हमारे मध्यवर्गीय निम्नवित्तीय नागरिक समाज का गुण-दोष भरा चित्र ज्यों का त्यों आंकने का यथासंभव प्रयत्न किया है। नाटककार ने हमारे अपने मध्य से कुछ पात्रों को चुनकर नाटक में प्रस्तुत किया है। यहाँ यह ध्यातव्य है कि नाटककार ने पात्रों के रूप में किसी एक विशेष अथवा अविशेष व्यक्तियों का चित्रण नहीं किया है वरन् उसने जातिगत पात्र लिए हैं, इसलिए पात्रों के नाम लेकर वह उन्हें पुरुष एक पुरुष दो, पुरुष तीन, पुरुष चार, स्त्री, बड़ी लडक़ी आदि कहकर पुकारता है। इनकी किसी के प्रति असम्मान की भावना भी नाटक में कहीं नहीं है वरन् महानगरीय संत्रासबोध, मानव-मूल्यों के विघटन और आर्थिक-सामाजिक झगड़ों में जकड़े हुए व्यक्तियों को नाट्यकार ने यथार्थ और मनोवैज्ञानिक धारतल पर प्रस्तुत किया है।

नाटक में महेन्द्रनाथ के परिवार के माध्यम से मोहन राकेश जी ने इस युगबोध को स्पष्ट करना चाहा है, कि आज का समाज और उसकी एक सुदृढ़ इकाई परिवार विघटनशीलता के किस कगार पर आ पहुंचे हैं। व्यक्ति न चाहते हुए भी भौतिक यांत्रिक दबाव में आकर किस प्रकार अपने को बेसहारा अनुभव कर रहा है। किस प्रकार युगानुरूप पारिवारिक सम्बन्धों में एक अयाचित तनाव की स्थिति आ गयी है और किस प्रकार महानगर में रहने वाले मध्यवर्गीय, निम्न मध्यवित्तीय परिवार इस यंत्रणा बोध के शिकार होकर टूट रहे हैं।[5] निरन्तर टूटते जा रहे हैं। पति-पत्नी के सम्बन्धों में जो मधुरता थी उसमें नीम की कड़वाहट भर गयी है और उत्सुक्ता से उबरने की चेष्टा में पति अथवा पत्नी अपने को लुटा रहे हैं। इसका परिणाम है कि एक गम्भीर सांस्कृतिक संकट, जिसकी नींव हम स्वयं खोद रहे हैं। हमारा मध्यवर्ग आर्थिक शिकंजे में कसा हुआ है। वह स्तरीकरण की दौड़ में न तो आगे जाकर उच्चवर्ग में मिल पा रहा है और न ही उसकी सामाजिक, प्रतिष्ठा उसे निम्न वर्ग में आने दे रही है। इसी कशमकश का शिकार है महेन्द्रनाथ का परिवार, जो एक प्रकार से हर परिवार की समस्या है। इन सबको मोहन राकेश जी ने कुछ पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है और युगीन खण्डित व्यक्तित्व चेतना को स्पष्ट करने का प्रयास किया है वास्तव में परिस्थितियां चाहे वे सामाजिक हो या आर्थिक या कोई और इतनी भयावह और उग्र रूप ले चुकी हैं कि आज हर व्यक्ति अपनी असीमित आकांक्षाओं के मध्य एक दूसरे के खण्डित महसूस कर रहा है।[6]

नाटक में खण्डित व्यक्तित्व चेतना को उजागर करने में सावित्री, महेन्द्र, बिन्नी और अशोक की प्रमुख भूमिका रही है और ये सभी एक ही परिवार के सदस्य हैं, जो मध्य वर्ग से उतरकर निम्न-मध्य-वित्तीय परिवार की स्थिति में आ गया है। 'एक समय था जब महेन्द्रनाथ का परिवार अच्छी आर्थिक स्थिति में था और चार सौ रुपए महीने का मकान था। टैक्सियों में आना-जाना होता था, किश्तों पर फ्रिज खरीदा गया था लडक़े-लडक़ी को कान्वेंट की फीसें जाती थीं। किन्तु व्यवसाय में घाटे के कारण परिवार की स्थिति दयनीय हो गयी।

परिवार का भरण-पोषण करना कठिन हो गया। महेन्द्रनाथ निठल्ला और आरामतलब व्यक्ति बन गया। इसलिए स्त्री सावित्री को ही नौकरी का सहारा लेना पड़ा है।'[7] परिवार के लोगों ने पहले ऐसी स्थिति का सामना नहीं किया होता है। इस लिए स्थिति खराब होने के कारण उनमें एक दूसरे के प्रति अविश्वास, घृणा और अजनबीपन आ जाता है। वह एक दूसरे को आधा अधूरा समझने लगते हैं। इसीलिए घर के प्रति किसी में भी उत्तरदायित्व का भाव नहीं आ पाता है। नाटकरार ने परिवार की इस आवारगी और आधे-अधूरेपन को यथार्थ रूप में चित्रित किया और इस चित्रण में मनोविज्ञान का सहारा लिया है।

'नाटककार ने सावित्री को आधी-अधूरी स्त्री दिखाकर यह मनोवैज्ञानिक तथ्य हमारे सामने रखा है कि सामाजिक स्तरीकरण की भूख में एक स्त्री क्या कुछ करने को तत्पर हो जाती है।'[8] सावित्री अपने इसी आधे-अधूरेपन के कारण आवारा हो जाती है और बड़े-बड़े लोगों के सम्पर्क में आती है, क्योंकि उसे व्यक्ति नहीं उसके पद से प्यार है और साथ रहकर वह पूरेपन अथवा पूर्ण व्यक्तित्व का एहसास करती है उसका पुत्र अशोक उसके इस अपूर्ण व्यक्तित्व और उसकी खण्डित चेतना का पर्दाफाश करता है।[9]

अशोक के इस संवाद में कितनी मनोवैज्ञानिकता है कि यद्यपि वे खण्डित व्यक्ति हैं किन्तु जब कोई बड़ा आदमी उनके यहां आता है तो इसका एहसास उन्हें बड़ी तीव्रता से कचोटता है और उसका मन इस कड़वाहट से भर जाता है कि वे जितने छोटे थे उससे भी छोटे हो गये हैं। इसी प्रकार जुनेजा के इस कथन में भी मनोवैज्ञानिकता का ही सहारा लिया है जब वह सावित्री की पोल खोलते हुए उसके यथार्थ रूप को उसके सामने उद्घाटित कर देता है। 'लेकिन तुम्हारी बात से इतना जरुर जाहिर था कि महेन्द्र को तुम तब भी वह आदमी नहीं समझती थी जिसके साथ तुम जिन्दगी काट सकती। पहले कुछ दिन जुनेजा एक आदमी था। ... तुम्हारे लिए जीने का मतलब सिर्फ पैसा रहा है। कितना कुछ एक साथ होकर, कितना कुछ एक साथ पाकर, और कितना कुछ एक साथ ओढक़र जीना। वह उतना कुछ कभी तुम्हें किसी एक जगह न मिल पाता, इसलिए जिस किसी के साथ भी जिन्दगी शुरु करती तुम हमेशा ही इतनी ही खाली इतनी ही बेचैन बनी रहती।'[10]

नाटक का नायक महेन्द्रनाथ भी खण्डित व्यक्ति है। उसके माध्यम से नाटककार ने मध्यवर्गीय परिवार को निम्नमध्य वित्तीय परिवार के मुखियों के चरित्र को मनोवैज्ञानिक ढंग से अभिव्यक्त किया है। वह अपने निठल्लेपन और बेकारी के कारण अपने को बेकार अनुभव करता है। सावित्री की नौकरी से घर का खर्चा तो चल गया किन्तु सावित्री और बच्चों की दृष्टि में स्वयं महेन्द्रनाथ एक खिलौना अथवा रबड़ स्टैंप मात्र बनकर रह गया। उसका कोई भी आदर नहीं करता है। सावित्री कितने ही प्रेमियों के साथ रंगरलियां मनाने लगती है। बड़ी लडक़ी बिन्नी भी किसी आवारा युवक के साथ भाग गयी, लडक़ा अशोक भी किसी के पीछे चप्पलें फटकाने लगा और छोटी लडक़ी किन्नी भी पुरुष-स्त्री के गुप्त सम्बन्धों में रस लेने लगी। महेन्द्रनाथ की सबने उपेक्षा की और इस उपेक्षा में विपथगामी बना दिया। सावित्री उसके आधे-अधुरेपन का बड़ा मनोवैज्ञानिक और यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती हुई कहती है : 'जब से मैने उसे जाना है, मैनें हमेशा हर चीज के लिए उसे किसी न किसी का सहारा ढूंढते पाया है। अपने आप पर उसे कभी किसी चीज के लिए भरोसा नहीं रहा। जिन्दगी में हर चीज की कसौटी जुनेजा जो सोचता है, जो जुनेजा चाहता है, जो जुनेजा करता है, वही उसे भी सोचना है, वही उसे भी चाहना है, वही उसे भी करना है, क्यों? क्योंकि जुनेजा तो एक पूरा आदमी है।'[11]

नायक की हालत देखीए- 'मैं इस घर में एक रबड़-स्टैंप भी नहीं सिर्फ एक रबड़ का टुकड़ा हूँ। बार-बार घिसा जाने वाला रबड़ का टुकड़ा। इसके बाद क्या कोई मुझे वजह बता सकता है, एक भी ऐसी वजह कि क्यों मुझे रहना चाहिए इस घर में, नहीं बता सकता न कोई मुझे।'[12] इस उदाहरण में महेन्द्रनाथ के स्वर में जो तल्खी है जो नैराश्य भाव है वह आर्थिक, सामाजिक और पारिवारिक रूप मे ऐसे टूटे हुए व्यक्ति का खण्डित प्रतिबिम्ब है, जिसमें आज के तथाकथित स्तरीकरण की दौड़ में भागने वाले किसी भी मध्यमवर्गीय व्यक्ति के खण्डित व्यक्तित्व को देखा जा सकता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि इस नाटक में खण्डित व्यक्तित्व चेतना को नाटककार ने मनोवैज्ञानिक धरातल पर बड़े सशक्त ढंग से चित्रित किया है। इस नाटक में विघटित होते हुए आज के मध्यवर्गीय शहरी परिवार का कड़वाहट भरा चित्रण किया गया है जिसकी विडम्बना यह है कि व्यक्ति स्वयं अधूरा होते हुए भी औरों के अधूरेपन को सहना नहीं चाहता है। काल्पनिक पूरेपन की तलाश में भटककर अपनी और दूसरों की जिन्दगी को नरक बना देती है।"[13]

स्त्रियां यद्यपि पुरुष से पौरुष की माँग करती है किन्तु मनोवैज्ञानिक कारणों से आज्ञाकारी और दब्बू पुरुष से ही ब्याह करती हैं। मूलत: उन्हें अधूरे पुरुष की ही तलाश होती है और उन्हें मिलते भी हैं। एक मनोवैज्ञानिक तथ्य यह भी है कि पुरुष के प्रति उनके आकर्षण का मूलाधार अप्राप्त की कल्पना भी होती है।[14] सावित्री अधूरे पुरुष से बंधी ही नहीं रहती। बल्कि जिन-जिन पुरुषों से बँधती है इसी अप्राप्त की प्राप्ति के कारण। जुनेजा और सावित्री के संवादों से उस बात का कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। जुनेजा को वह कभी इसलिए प्यार करती थी - सिर्फ इसलिए कि मैं जैसा भी था, जो भी था महेन्द्र नहीं था। 'सावित्री की सारी प्रणय यात्रा इस नहीं से शुरु होती है प्राप्त से अप्राप्त की ओर पहले कुछ दिन जुनेजा एक आदमी था। जुनेजा के बाद जिससे कुछ दिन चकाचौंध रही तुम वह था शिवजीत। एक बड़ी डिग्री बड़े-बड़े शब्द और पूरी दुनिया घूमने का अनुभव। पर असल-चीका वही कि वह जो भी था और ही कुछ था महेन्द्र नहीं था, उसके बाद

सामने आया जगमोहन। ऊँचे सम्बन्ध, जवान की मिठास, टिपटाप रहने की आदत और फिर उसी जगह पर कि उसमें जो कुछ भी था जगमोहन का सा था महेन्द्र का सा नहीं था। मोहन राकेश ने अपनी कहानियां भी मनोवैज्ञानिक आधार पर लिखी हैं।[15] इनकी कहानियां समाजिक समस्याओं के आधार पर नहीं लिखी गईं। इन्होंने पति-पत्नी के संबंधो को लेकर कहानियां लिखी हैं। 'क्वार्टर' में मोहन राकेश ने आजकल शहरों में रहने वाले लोगों की कहानी बताई है कि आजकल बाहर रहना कितना कठिन है और ऊपर से कोई अच्छी जगह मिलना कितना कठिन काम है। इसका चित्रण मोहन राकेश ने 'क्वार्टर' में किया है। 'शंकर को चार कमरों वाला क्वार्टर क्या मिल गया कि मूसीबत ही आ गई। आने जाने वाले लोगों का तांता ही लगा रहता है। आने जाने वालों के कारण रहने वालों के लिए कमरे भी छिन गए और घर की शांति भी खत्म हो गई और पति पत्नी के बीच तनाव बढ़ गया।'[16] पड़ोसन मिसेज शर्मा भी उनकी लड़ाई को बढ़ाने के लिए आग में घी डालने का काम करती थी। तनाव और घुटन के बीच यह कहानी खत्म हो जाती है। अन्त में पाठक को यही लगता है कि शंकर और राधा के लिए अच्छा होता अगर वह किसी छोटी जगह में रह रहे होते, न कोई परेशानी होनी थी और न ही उनके सम्बन्धों में तनाव आना था।

'अपरिचित' भी स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को लेकर लिखी गई एक मनोवैज्ञानिक कहानी है। एक विवाहित पुरुष एवं एक विवाहित स्त्री की मुलाकात होती है। स्त्री अपने पति को बम्बई में इंग्लैंड के लिए रवाना करके लौट रही है। साथ में चार महीने की बच्ची है। बात-चीत के दौरान दोनों अपनी बातें करने लगते हैं। पत्नी बताती है कि पति के सामने उसकी जुबान नहीं खुलती है और पति उससे असन्तुष्ट रहता है। वह कहती है कि हमारी आपस में 'अंडरस्टैडिंग' नहीं है।'[17] वह मुझसे नाराज रहते हैं कि मैं ज्यादा बोलती नहीं हूँ। पत्नी अपने को और अपनी कमी को समझने का प्रयत्न करती है। वह दोनो एक दूसरे से ऐसे बाते करने लगे मानो कहीं से दो पुराने मित्र बात कर रहे हैं। पुरुष जब सुबह उठता है तो स्त्री जा चुकी होती है और वह पुरुष को अच्छी तरह रजाई ओढ़ा गई। इस कहानी में पति पत्नी के सम्बन्धों का तनाव और असामंजस्य तो है पर स्त्री-पुरुष के बीच का सहज रोमांस और कोमलता भी है। कहानी का अन्त मन को स्पर्श करता है। शहरी जीवन की यथार्थ स्थिति को दिखाने वाली एक कहानी है। ठहरा हुआ चाकु भी मोहन राकेश को मनोवैज्ञानिक कहानी है। आजकल बात बात पर छुरा, चाकु निकालकर गुण्डे जो चाहे करवा लेते हैं। हम चाहकर भी उनका विरोध नहीं कर सकते है। गुण्डो को पहचानकर भी शिनाख्त नहीं करना चाहते क्योंकि जान जाने का डर रहता है। इस कहानी का नायक बर्फ खरीदने के लिए अपना स्कूटर रास्ते में रुकवाता है। दूसरा व्यक्ति जबरदस्ती उसमें आकर बैठ जाता है। उसके विरोध करने पर जेब से चाकू निकाल कर उसे धमकाता है और स्कूटर वाले को चलने के लिए कहता है। थाने में रिपोर्ट दर्ज की जाती है और कहानी के नायक को थाने शनाख्त के लिए बुलाया जाता है। उसके मन में द्वन्द्व चलता है कि वह गुण्डे को पहचाने या न पहचाने वह सोचता है कि अगर वह गुण्डे को पहचान लेगा तो वह उसका दुश्मन बन जाएगा। परन्तु अगर वह उसे नहीं पहचानेगा तो वह उसे कुछ नहीं कहेगा। परन्तु कहानी के अन्त मे वह गुण्डे को पहचान लेता है और हाँ बोल देता है। इस कहानी में कहानी के नायक के मन के द्वन्द्व को दिखाया है कि वह कैसे एक गुण्डे को पहचानने के लिए इतना सोचता है।

'लहरों के राजहंस' भी मोहन राकेश का मनोवैज्ञानिक नाटक है जिसमें मोहन राकेश जी ने नन्द और सन्दरी के माध्यम से आज के मनुष्य के मन की स्थिति को दर्शाया है कि कैसे मनुष्य अपने मन ही मन में क्या क्या सोचता रहता है और चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पाता है। नन्द सुन्दरी के प्रेम में इतना मगन हो गया है कि उसे यह समझ नहीं आता है कि वह सुन्दरी को किस तरह समझाये कि वह जो कुछ कर रही है वह गलत है। नन्द को अगर पता भी होता है कि सुन्दरी गलत है परन्तु वह फिर भी सुन्दरी को कुछ नहीं कह पाता है। सुन्दरी अपने अभिमान की वजह से किसी की बात नहीं सुनती है वह जो करना चाहती है वह कर के ही रहती है किसी के आगे झुकना उसे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता है इस लिए जब सुन्दरी को पता चलता है कि 'नन्द मदनोत्सव के लिए सब के घर जाकर आने के लिए कहकर आये हैं तो वह कहती है कि उसे यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगता कि कोई उसके मदनोत्सव पर बार-बार कहने से आए कोई नहीं आता। तो ना आए, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता है।'[18] यहाँ सुन्दरी का अभिमान साफ-साफ दिखाई देता है। 'अन्धेरे बन्द कमरे' भी मोहन राकेश में हरबंस और नीलिमा के मन की स्थिति को दिखाया है। अन्तराल भी मोहन राकेश का मनोवैज्ञानिक उपन्यास है, जिसमें शयामा कुमार के आने पर कुमार से क्या-क्या बाते करेगी और कुमार उसे क्या कहेंगे इस विषय को लेकर उसके मन में क्या-क्या भाव उठते हैं, इन सब का चित्रण मोहन राकेश ने 'अन्तराल' में किया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मोहन राकेश जी ने जितनी भी कहानियाँ, नाटक और उपन्यास लिखे उनमें से अधिकांश मनोवैज्ञानिक उपन्यास नाटक और कहानियाँ हैं, जिन्हे समीक्षों की दृष्टि ने बड़ी खूबसूरती से पकड़ा है।

सन्दर्भ :

1. हिन्दी साहित्य इतिहास, अचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 226
2. हिन्दी साहित्य इतिहास, अचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 226
3. हिन्दी साहित्य इतिहास, अचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 227
4. हिन्दी साहित्य इतिहास, अचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 228

5. उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, पृ. 2
6. उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, पृ. 6
7. उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, पृ. 6
8. उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, पृ. 8
9. उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, पृ. 11
10. उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, पृ. 11
11. उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, पृ. 12
12. उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, पृ. 13
13. उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, पृ. 13
14. उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, पृ. 15
15. उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, पृ. 17
16. उर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, पृ. 17
17. प्रतिभा अग्रवाल, भारतीय साहित्य के निर्माता - मोहन राकेश. 15
18. प्रतिभा अग्रवाल, भारतीय साहित्य के निर्माता - मोहन राकेश. 62